

महाभारत एक संक्षिप्त परिचय

भारतीय साहित्य के दो आकर ग्रंथ हैं, महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण और महर्षि वेद व्यास कृत महाभारत। रामायण आदि ग्रंथ हैं क्योंकि माना जाता है कि लौकिक साहित्य के सर्जन का प्रारंभ इसी ग्रंथ से हुआ। इससे पूर्व के साहित्य को आर्ष या वैदिक साहित्य कहते हैं। व्याघ्र के द्वारा कामक्रीड़ा रत क्रौंच पक्षी के जोड़े में से नर को अपने बाण से विद्ध किए जाने पर क्रौंची के विलाप को सुनकर तमसा नदी के तट पर गए महर्षि वाल्मीकि का हृदय द्रवित हो गया और उनका शोक एक श्लोक के रूप में फूट पड़ा।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शास्वतीः समाः
यत्कारेंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।

यह लौकिक साहित्य का प्रथम श्लोक है और इसके बाद नारद जी की आज्ञा से महर्षि ने चौबीस हजार श्लोकात्मक रामायण महाकाव्य की रचना की ।

कालक्रम के अनुसार महाभारत दूसरा महाकाव्य है। जिसे कृष्णद्वैपायन व्यास द्वारा लिखा गया। यह अठारह पर्वों का एक लाख श्लोक से युक्त विराट काव्य है । विद्वानों का मत है कि व्यास जी ने सर्वप्रथम जय नामक ग्रंथ लिखा जिसमें आठ हजार आठ सौ श्लोक थे। उन्होंने यह कथा अपने पुत्र तथा शिष्य सुकदेव को सुनाई। तत्पश्चात् उनके शिष्य वैशम्पायन ने यह कथा जनमेजय को सुनायी। तब इसका आकार चौबीस हजार श्लोकों का हो गया और जब नैमिषारण्य में सौति ने अठासी हजार ऋषियों को यह कथा सुनायी तब आख्यानों और उपाख्यानों सहित इसका आकार एक लाख श्लोक का हो गया। भारतीय परंपरा इसका समर्थन नहीं करती। आठ हजार आठ सौ श्लोक वस्तुतः कूट श्लोक हैं जिसका अर्थ गहन है और जिनके बारे में स्वयं वेद व्यास ने कहा है कि इनका अर्थ मैं जानता हूं शुक जानता है और शायद संजय जानता है ।

अठारह पर्व के इस विशालकाय ग्रंथ में अनेक आख्यानों और उपाख्यानों सहित कौरव और पाण्डवों की मुख्य कथा वर्णित है। इसके उत्तर भारतीय संस्करण में आज 84642 श्लोक और दाक्षिणात्य संस्करण मेंहजार श्लोक हैं। यदि हरिवंशपुराण को भी मिला दिया जाए जिसे महाभारत का खिलपर्व कहते हैं तो श्लोकों की संख्या 1,00,000 तक पहुंच जाती है।

महाभारत में उल्लेख है कि व्यास जी ने सौ पर्व लिखे थे किंतु उन्हें सूतवंशी लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवा ने अठारह पर्वों में व्यवस्थित कर दिया।

एतत् पर्वशतं पूर्णं व्यासेनोक्तं महात्मना । 83॥

महाभारत को इतिहास कहा गया है ।

इतिहास प्रदीपेन मोहावरण घातिना । 87

इसे इसके महत्व के कारण और इसमें निहित ज्ञान के कारण पंचम वेद कहा गया है। और एक स्थान पर तो सौति ने इसे उपनिषद भी कहा है।

अत्रोपनिषदं पुण्यां कृष्णद्वैपायनौऽब्रवीत् ॥253॥

इस संपूर्ण मुख्य कथा का महाद्रुम दुर्योधन का क्रोध कहा जाता है। और अल्प बुद्धि प्रायः धृतराष्ट्र इसके मूल कहे गए हैं।

दुर्योधनो मन्युमयो महादुरमः

मूलं राजा धृतराष्ट्रौऽमनीषी । 110॥

संपूर्ण महाभारत कथा के मूल में देखा जाए तो जिस प्रकार वेदों में केवल परब्रह्म की ही कीर्तन है इस पंचम वेद में भी तात्त्विक दृष्टि से भगवान् वासुदेव की ही संकेत है। स्वयं सौति ने कहा है कि

भगवान् वासुदेवश्च कर्त्यते ऽत्र सनातनः ॥256॥

इस महान् ग्रंथ में भीष्म जी भी आदि से अंत तक रहते हैं । अनुशासन पर्व तक तो वे सशरीर रहते हैं । भीष्म का प्रथम उल्लेख महाभारत में आदि पर्व के प्रथम अध्याय में श्लोक क्रमांक 94 पर हुआ है।

मातुर्नियोगाद् धर्मात्मा गांगेयस्य च धीमतः ॥ 94/1 आदि पर्व ।

व्यास जी ने जो इस ग्रंथ के बारे में कहा है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के विषय में जो इस ग्रंथ में वर्णित है। वही अन्यत्र मिलेगा और जो इसमें नहीं है वह कहीं नहीं है। उनकी यह गर्वोक्ति नहीं है। यह यथार्थ है। और तो और भारत का सर्वोत्तम दार्शनिक ग्रंथ श्रीमद्भगवत गीता भी इसी महाभारत के भीष्म पर्व का एक भाग है। अतः उनका कथन -

धर्मे ह्यर्थे कामे मोक्षे च भरतर्षभ

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित ।

महाभारत का रचना काल

1. कन्नौज के राजा जयचंद (12वीं शताब्दी) के राजकवि श्रीहर्ष ने अपने महाकाव्य "नैषधीय चरितम्" में महाभारत और व्यास दोनों का उल्लेख किया है।

व्यासो महाभारत सर्गयोग्यः।

2. सातवीं सदी में महाकवि माघ द्वारा लिखे गए महाकाव्य "शिशुपाल वध" की कथा महाभारत पर ही आधारित है।

3. महाराज हर्ष के (640 ईस्वी) के राजकवि बाणभट्ट भी महाभारत से परिचित हैं और इसका उल्लेख अपनी सुप्रसिद्ध कृति "कादम्बरी" में इस प्रकार करते हैं -

पाण्डु धार्तराष्ट्राणां कुलकृत खेदम्।

4. पांचवीं शताब्दी में भारवि द्वारा लिखा गया महाकाव्य "किरातार्जुनीयम्" जिसमें अर्जुन द्वारा व्यासजी के परामर्श से पाषुपतास्त्र की प्राप्ति हेतु तपस्या और शिवजी के प्रसाद से अस्त्र प्राप्ति वर्णित है, महाभारतकथा पर ही आधारित है।

5. महाभाष्यकार पतंजलि का काल 150 ईस्वी माना जाता है। उन्होंने भी अपने ग्रंथ में महाभारत का उल्लेख किया है।

6. आश्वलायन कृत गृहसूत्र (3.4.4) में महाभारत कथा का हमें सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है। यह ग्रंथ 450 ईसा पूर्व लिखा गया था।

7. स्वयं पाणिनि ने युधिष्ठिर, भीम, विदुर, आदि शब्दों की व्युत्पत्ति बताई है और यह भी कहा है कि महाभारत शब्द में "महा" शब्द में उदात्त स्वर है यहां महाभारत एक ग्रंथ के रूप में वर्णित है। पाणिनि का समय लगभग 600 वर्ष ईसवी पूर्व का है।

8. महाभारत में कई स्थलों पर बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का उल्लेख है। जैसे विदुर कहते हैं

यच्च शून्य मुपासते ।

इससे कुछ विद्वान मानते हैं कि महाभारत भगवान बुद्ध के बाद का है। क्योंकि भगवान बुद्ध महाभारत का उल्लेख नहीं करते। अतः इस ग्रंथ की रचना 485 ईसापूर्व के बाद हुई होगी।

महाभारत का युद्ध कब हुआ होगा यह निश्चित करने के लिए सौभाग्य से हमें ज्योतिष की सहायता मिल जाती है। महाभारत में व्यास जी ने बड़ी कौशल से कुछ ज्योतिर्विज्ञान से संबंधित तथ्य दे दिए हैं जिनके आधार पर पश्चगामी काल गणना करके सुनिश्चित तिथि ज्ञात की जा सकती है । ऐसे संकेत उद्योग पर्व में 143वें अध्याय में है जहां कर्ण श्रीकृष्ण से अपने जन्म का वृत्तांत सुनकर भी बंधुओं से मिल जाने के उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता है और श्रीकृष्ण से कहता है कि मैं भावी अमंगलकारी अपशकुनों को देख रहा हूं जिनसे आभास होता है कि क्षत्रियों का महाविनाश होगा। ये अपशकुन इस प्रकार वर्णित हैं -

प्राजापत्यं हि नक्षत्रं ग्रहस्तीक्ष्णो महाद्युतिः ।

शनैश्चरः पीडयति पीडयन् प्राणिनोऽधिकम् ॥ 8/143॥

(महातेजस्वी एवं तीक्ष्ण ग्रह शनैश्चर प्रजापति संबंधी रोहिणी नक्षत्र को पीड़ित करते हुए जगत के प्राणियों को अधिक पीड़ा दे रहा है।)

कृत्वा चांगारको वक्रं ज्येष्ठायां मधुसूदन ।

अनुराधां प्रार्थयते मैत्रं संगमयन्निव ॥9/143॥

(मधुसूदन मंगल ग्रह ज्येष्ठा के निकट से वक्र गति का आश्रय ले अनुराधा नक्षत्र पर आना चाहता है जो राज्यस्थ राजा के मित्र मंडल का विनाश सा सूचित कर रहे हैं।)

सोमस्य लक्ष्मा व्यापृत्रं राहुरर्कमुपैति ।

दिवश्चोलका पतन्त्येता सनिर्घाताः सकम्पनाः ॥

(चंद्रमा का कलंक मिट सा गया है। राहु सूर्य के समीप जा रहा है आकाश से उल्काएं गिर रही हैं ।)

नूनं महद्भयं कृष्ण कुरूणां समुपस्थितम् ।

विषेण हि वाष्पेय चित्रां पीडयते ग्रह ॥10/143॥

(निश्चय ही कौरवों पर महान भय उपस्थित हुआ है विशेषतः महापात नामक ग्रह चित्रा को पीड़ा दे रहा है जो राजाओं के विनाश का सूचक है ।)

कुछ ऐसे ही अमंगल स्वयं व्यास जी ने धृतराष्ट्र को सावधान करते हुए वर्णित किए हैं जहां वे भीष्म पर्व के दिवतीय अध्याय में कहते हैं -

या चैषा विश्रुता राजंस्त्रैलोक्ये साधुसम्मता ।

अरुन्धती तयाप्येष वशिष्ठः पृष्ठतः कृतः ॥31/2॥

(राजन जो अरुन्धती तीनों श्लोकों में पतिव्रतों की मुकुटमणि के रूप में प्रसिद्ध है उन्होंने वशिष्ठ को अपने पीछे कर दिया है ।)

रोहिणी पीडयन्नेष स्थितो राजन्षनैश्चरः ।

व्यापृतं लक्ष्म सोमस्य भविष्यति महद भयम् ॥32॥

(अर्थात् शनैश्चर रोहिणी नक्षत्र को पीड़ित कर रहा है और चंद्रमा का कलंक मिट गया है अतः महान भय उपस्थित है ।)

आगे भीष्म पर्व के ही तीसरे अध्याय में वे फिर विस्तार से ग्रहों की स्थिति का वर्णन करते हैं जो अशुभ फलप्रद है ।

श्वतो ग्रहस्तथा चित्रां समतिक्रम्य तिष्ठति ।

अपायं हि विशेषेण कुरूणां तत्र पश्यति ॥12॥

(केतु ग्रह चित्रा नक्षत्र का अतिक्रमण करके स्वाति पर स्थित हो रहा है अतः कुरूओं की विशेष क्षति होगी ।)

धूमकेतुर्महाघोरः पुष्यं चाक्रम्य तिष्ठति ।

सेनयोरपिवं घोरं करिष्यति महाग्रहः ॥13/3॥

(पुष्य नक्षत्र पर भयंकर धूमकेतु स्थित है जो दोनों सेनाओं के लिए घोर अमंगलकारी है ।)

मघास्वंगारको वक्रः श्रवणे च बृहस्पति ।

भगं नक्षत्र माक्रम्य सूर्यपुत्रेण पीडयते ॥14॥

(मंगल वक्र हो मघा नक्षत्र पर स्थित है। बृहस्पति श्रवण नक्षत्र पर है। सूर्य पुत्र शनि पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र पर पहुंच कर उसे पीड़ा दे रहा है।)

शुक्रः प्रोष्ठपदे पूर्वे समारुह्य विरोचते ।

उत्तरे तु परिक्रम्य सहितः समुदीक्षते ॥15/3॥

(शुक्र ग्रह पूर्व भाद्रपद पर आरुढ़ होकर प्रकाशित हो रहा है।)

श्वेतो ग्रह प्रज्ज्वलितः सधूम इव पावकः ।

ऐन्द्रं तेजस्वि नक्षत्रं ज्येष्ठामाक्रम्य तिष्ठति ॥16/3॥

(केतु धूमयुक्त अग्नि के समान प्रज्ज्वलित है। वह तेजस्वी ज्येष्ठा नक्षत्र पर स्थित है।) धुरवं प्रज्ज्वलितो घोर मपसव्यं प्रवर्तते।

रोहिणीं पीडयत्येवमुमौ च शषिभास्करो।

चित्रा स्वात्यन्तरे चैव विष्ठितः परूषग्रहः ॥17/3॥

(चित्रा व स्वाति के बीच में स्थित हुआ क्रूर ग्रह राहु वक्रीय होकर रोहिणी व चंद्रमा और सूर्य को पीड़ा पहुंचाता है। वह अत्यंत प्रज्ज्वलित होकर ध्रुव के बाईं ओर जा रहा है जो घोर अनिष्ट का सूचक है।)

वक्रानु वक्रं कृत्वा च श्रवणं पावकप्रभः ।

ब्रह्म राशिं समाकृत्य लोहितांगो व्यवस्थितः ॥18/3॥

(अग्नि के समान कांतिमान मंगल ग्रह जिसकी स्थिति मघा में बताई गई है बारंबार वक्र होकर ब्रह्म राशि अर्थात् बृहस्पति युक्त नक्षत्र श्रवण को पूर्ण रूप से आवृत्त करके स्थित है।)

संवत्सरस्थायिनौ च ग्रहौ प्रज्ज्वलितावुभौ ।

विषाखायाः समीपस्थौ बृहस्पति शनैश्चरौ ॥27/3॥

(वर्षपर्यंत एक राशि पर रहने वाले दो प्रकाश मान बृहस्पति और शनैश्चर तिर्यकवेध के द्वारा विशाखा नक्षत्र के समीप आए हैं।)

चन्द्रादित्यावुभौ ग्रस्ता वे कान्हा हि त्रयोदशीम् ।

अपर्वणि ग्रहं यातौ प्रजासंक्षयमिच्छतः ॥24/3॥

(इस पक्ष में दो तिथियों के क्षय होने के कारण एक ही दिन त्रयोदशी तिथि को बिना पर्व के ही राहु ने चंद्रमा और सूर्य दोनों को ग्रस लिया है।)

ग्रहों और नक्षत्रों की इन स्थितियों के आधार पर श्रीयुत बी.एन. नरहरि आचार ने भौतिक शास्त्र के मान्य विद्वान हैं और वर्तमान में अमेरिका के टेनेसी प्रांत के मेम्फिस विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर हैं उच्च क्षमता कम्प्यूटर के द्वारा प्लानेटेरियम सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हुए लगातार चार वर्ष के प्रयास के बाद महाभारत युद्ध की वास्तविक तिथि खोज निकाली है।

उन्होंने विशेषतः तीन सूत्रों को पकड़ा है। प्रथम शनि ग्रह की रोहिणी नक्षत्र में स्थिति, यह सुविधा के लिए है क्योंकि शनि ग्रह तीस वर्ष में राशि चक्र की एक परिक्रमा करता है । द्वितीय सूत्र लिया है मंगल ग्रह का वक्रीय होकर मघा नक्षत्र पर स्थित होना तथा बृहस्पति का श्रवण नक्षत्र पर स्थित होना। तीसरा सूत्र लिया है तेरह दिन के अंदर ही सूर्य और चंद्रग्रहण दोनों का हो जाना। नक्षत्रों की इन विशेष स्थितियों के आधार पर उन्होंने महाभारत की विशिष्ट घटनाओं की तिथि निर्णय इस प्रकार किया है।

क्रमांक	घटनाक्रम	नक्षत्र	अंग्रेजी तिथि
1	श्रीकृष्ण का शांति प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर जाना ।	रेवती	26 सितंबर 3067 बीसी
2	शांति प्रस्ताव में विफल होकर लौटते हुए श्री कृष्ण व कर्ण का संवाद		8 अक्टूबर 3067बीसी
3	महाभारत में वर्णित चंद्रग्रहण	कार्तिक पूर्णिमा	29 सितंबर 3067 बीसी
4	महाभारत में वर्णित सूर्यग्रहण	अमावस्या	14 अक्टूबर 3067 बीसी
5	महाभारत युद्ध का आरंभ		22 नवंबर 3067 बीसी
6	युद्ध का चौदहवां दिन घटोत्कच का वध		8 दिसम्बर 3067 बीसी
7	युद्ध का अंतिम दिन, बलराम का आगमन,		12 दिसंबर 3067 बीसी
8	भीष्म का स्वर्गारोहण , माघ शुक्ल अष्टमी	रोहिणी नक्षत्र	17 जनवरी 3066 बीसी
9	मकर संक्रांति	शुक्ल पक्ष पंचमी	13 जनवरी 3066 बीसी

इतनी सटीक जानकारी इससे पूर्व कभी नहीं मिली थी । उनका यह लेख THE HINDU RENAISSANCE पत्रिका के वर्ष 2006 के जनवरी अंक में प्रकाशित हुआ है।

आचार महोदय के इसी लेख से ज्ञात होता है कि इससे पूर्व भी ज्योतिष के आधार पर महाभारत युद्ध का काल निर्धारण कुछ अन्य विद्वानों द्वारा भी किया गया है जैसे- श्री साठे द्वारा Search for the year of Bharat War, Navbharati Publications, Hyderabad 1983 तथा श्री राघवन द्वारा The Date of the Mahabharata War, Srirangam Printers, Srinivasnagar, 1969 इस दिशा में श्री राघवन के प्रयास अधिक परिपूर्ण हैं क्योंकि उन्होंने ग्रह और नक्षत्रों की कई स्थितियों का उपयोग अपनी गणना में किया है और इस गणना के अनुसार भी महाभारत का होना 3000 ई.पू. में सिद्ध होता है और भारतीय परंपरा भी यही कहती है कि महाभारत को हुए पांच हजार दो सौ वर्ष बीत चुके हैं श्री कामथ द्वारा संपादित पुस्तक The Date of Mahabharat War Based on the Astronomical Data Mythic Society Bangalore, 2004 भी इसी दिशा में नवीन प्रयास है

आर्यभट्ट ने (5 वीं शताब्दी ए.डी) कलियुग का आरंभ 18 फरवरी 3102 बीसी से माना है। भारतीय काल गणना के अनुसार इस वर्ष अर्थात् 2010 में कलियुग के 5111 वर्ष बीत चुके हैं। और 5112 वां युगाब्ध चल रहा है। महाभारत युद्ध के बाद युधिष्ठिर ने 36 वर्ष राज्य किया और कृष्ण भी 36 वर्ष बाद ही यादवों का विनाश देखकर गोलोक चले गए। और कलियुग प्रारंभ हो गया। इस प्रकार महाभारत युद्ध $5111+36= 5147$ वर्ष पूर्व होना भारतीय परंपरा से प्राप्त है। ज्योतिषी गणना से प्राप्त समय $3067+2010= 5077$ आता है। अतः केवल $5147-5077=70$ वर्ष का ही अंतर पड़ता है जो 5000 वर्ष की लंबी अवधि को देखते हुए नगण्य है। यह बड़े संतोष की बात है कि आज हम जान पाए हैं कि आज से 5076 वर्ष पूर्व भीष्म इस पृथ्वी पर थे।

यह तिथि भारतीय परंपरा से पूर्णतः मेल खाती है। जिसके अनुसार वर्तमान में 5112 वां कलियुगाब्ध चल रहा है। जो श्रीकृष्ण के गोलोक प्रस्थान से प्रारंभ होता है। और वे लगभग महाभारत युद्ध के छत्तीस वर्ष बाद अपने धाम गए।

आज जिस रूप में महाभारत हमें उपलब्ध है उसके बारे में विद्वानों में बड़ा मतभेद है आज उपलब्ध महाभारत में अठारह पर्व हैं। पर्वों के नाम और उनकी श्लोक संख्या इस प्रकार है-

क्रम संख्या	पर्व का नाम	अध्यायों की संख्या	श्लोकों की संख्या
01	आदि पर्व	227	8884
02	सभा पर्व	78	2511

03	वन पर्व	269	11667
04	विराट पर्व	67	2050
05	उद्योग पर्व	186	6698
06	भीष्म पर्व	117	5884
07	द्रोण पर्व	170	8909
08	कर्ण पर्व	69	4964
09	शल्य पर्व	59	3220
10	सौप्तिक पर्व	18	870
11	स्त्री पर्व	27	775
12	शांति पर्व	339	14732
13	अनुशासन पर्व	146	8000
14	आश्वमेधिक पर्व		3320
15	आश्रमवासिक पर्व	42	1506
16	मौसल पर्व	08	320
17	महाप्रस्थानिक पर्व	03	123
18	स्वर्गारोहण पर्व	05	209
	योग		84642
	खिल पर्व हरिवंश		12000

सामान्यतः समझा जाता है कि महाभारत में मुख्यतः कौरव और पाण्डवों का युद्ध वर्णित है और वही इसकी प्रधान घटना है किंतु ऐसा नहीं है उपर्युक्त अनुसूची को देखकर स्पष्ट है कि उद्योग पर्व से सौप्तिक पर्व तक की घटनाएं युद्ध से संबंधित हैं और विस्तार से छः पर्वों में वर्णित हैं किंतु फिर भी उनका कुल विस्तार 30545 श्लोकों का है अर्थात् कुल कलेवर का 36 प्रतिशत जबकि शांति पर्व और अनुशासन पर्व दोनों को मिलाकर

श्लोक संख्या 22732 तक पहुंच जाती है जो कुल कलेवर का 27 प्रतिशत है कई बार यह जानकर आश्चर्य होता है कि महाभारत का मुख्य रस वीर नहीं शांत है।

पर्वों के विस्तार से स्पष्ट है कि जहां शांति पर्व (14732) वन पर्व (11664) तथा द्रोण पर्व (8909) सबसे विषाल पर्व हैं वहीं महाप्रस्थानिक (123) श्लोक स्वर्गारोहण (209) और मौसल (320) सबसे छोटे पर्व हैं।

महाभारत के आंतरिक अध्ययन से ज्ञात होता है कि व्यास जी ने इसमें सौ पर्व रखे थे किंतु जब उग्रश्रवा सौति ने नैमिषारण्य में इसे 88000 ऋषियों को सुनाया तब इसे अठारह पर्वों में व्यवस्थित कर दिया। डॉ. वसुदेव शरण अग्रवाल का अनुमान है कि ऐसा गुप्त काल में संभव हुआ होगा यह भी उल्लेख है कि वेदव्यास जी ने चौबीस हजार श्लोकों युक्त भारत ग्रंथ लिखा था इसमें आठ हजार आठ सौ कूट श्लोक हैं जिनका अर्थ बड़ा गहन है इस ग्रंथ का ज्ञान उन्होंने अपने पुत्र शुकदेव और अपने प्रधान शिष्य वैशम्पायन को कराया था जन्मेजय द्वारा आयोजित यज्ञ में अपने पूर्वजों के इतिहास को जानने के इच्छुक जनमेजय द्वारा व्यास जी से प्रार्थना करने पर उन्होंने वैशम्पायन को ही यह इतिहास सुनाने की आज्ञा दी थी साधारण धारणा के विपरीत उस समय भी महाभारत उपाख्यानों सहित एक लाख श्लोकों का हो गया था और शतसाहस्री संहिता बन गया था जैसा कि सौति ने महाभारत में स्वयं कहा है कि मैं वही महाभारत आपको सुना रहा हूं उस समय भी इसका प्रारंभ पौष्य पौलोम तथा आस्तीक अध्यायों से होता था।

चतुर्विंशतिसाहस्रीं चक्रे भारत संहिताम् ।102/प्रथम अध्याय /आदिपर्व/पर्व संग्रह
उपाख्यानै बिना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः।

इदं शतसहस्रं तु लोकानां पुण्यकर्मणाम्।
उपाख्यानैः सह ज्ञेयमाद्यं भारतमुत्तमम्।101

यत्तु शौनक सत्रे ते भारताख्यान मुत्तमम्।
जनमेजयस्य तत् सत्रे व्यास शिष्येण धीमता।33/पर्व संग्रह/ द्वितीय अध्याय

एतत् पर्वषतं पूर्णं व्यासेनोक्तं महात्मना।

यथावत् सूतपुत्रेण लोमहर्षणिना ततः।
उक्तानि नैमिषारण्ये पर्वाण्यष्टाषैव तु॥84/पर्व संग्रह/द्वितीय अध्याय

चूंकि यह महाग्रंथ भारतीय संस्कृति और दर्शन का विश्वकोश है इसलिए इसमें लक्षणों के आधार पर इसे पुराण पंचमवेद इतिहास उपनिषद आख्यान आदि भी कहा गया है जबकि यथार्थ में यह काव्य है क्योंकि व्यासजी ने स्वयं इसे काव्य कहा है और ब्रह्मा जी ने इसका अनुमोदन किया है

व्यासजी का कथन-

कृतं मयेदं भगवन् काव्यं परमपूतिजतम्।61/आदिपर्व

ब्रह्मा जी का कथन-

त्वया च काव्यमित्युक्तं तस्मात् काव्यं भविष्यति।72/आदिपर्व

भारतीय परंपरा के विद्वान महाभारत को कम से कम तीन हजार वर्ष पुराना मानते हैं श्री इन्द्र नारायण द्विवेदी ने अपनी रचना महाभारत परिचय में महाभारतीय संहिता का रचना काल 3138 से 3126 ई.पू. का माना है तो पंडित बाल गंगाधर तिलक ने गीता रहस्य में महाभारत की रचना 1400 ई.पू. की मानी है।

यह तो रही हमारी परम्परागत शास्त्रीय दृष्टि अब उन पाश्चात्य विद्वानों तथा आधुनिक भारतीय विद्वानों के विचारों का भी संक्षिप्त अवलोकन महाभारत के विषय में कर लेना समीचीन होगा । इस संबंध में The cultural Heritage of India Volume –II Part-I में निहित लेख The Mahabharata : its history and character जिसे प्रतिष्ठित विद्वानों श्री पी.एल.वैद्य तथा श्री ए.डी. पुषालकर महोदय ने लिखा है बहुत उपयोगी है उनके अनुसार महाभारत की उत्पत्ति और विकास को पाश्चात्य विद्वानों ने दो दृष्टियों से देखा है विश्लेषणात्मक और संश्लेषणात्मक । और दोनों ही वर्ग के विद्वान भिन्न-भिन्न निर्णयों पर पहुंचे हैं । अधिकांश पश्चिमी विद्वान मानते हैं कि महाभारत 400 बी. सी. के लगभग अस्तित्व में आया और उसमें लगातार परिवर्धन होता रहा यह क्रम 400 ए.डी. तक चला अतः इस ग्रंथ का कोई एक

लेखन नहीं है बल्कि अनेक प्रतिभाओं का सम्मिलित योगदान इसे मानना चाहिए जिसका विकास आठ सौ वर्षों में हुआ Winternitz महोदय ने अपनी रचना A History of Indian literature में कहा है 'One date of the Mahabharat does not exist at all'.

विश्लेषणात्मक विचार धारा जिसके अनुसार कौरव पाण्डवों के युद्ध की मूल घटना ही काव्य का केन्द्रीय बिन्दु है जिसके आस-पास समय के अनुसार अनेक सम्बद्ध और असम्बद्ध आख्यान जुड़ते चले गये इस विचारधारा के मुख्य विद्वान Lassen , Sorensen's ,Ludwig and Hopkins हैं श्री पुषालकर महोदय ने इन्हें उद्धृत करते हुए लिखा है

Lassen who may be said to have inaugaurated the modern critical study of the Mahabharata. subjected the epic to a complete anaalysis. According to him the epic as recited by saunaka was its second recension, which he places between 400 and 450 B.C. and which, he holds, was there after augmented by interpolations of a Krsnite nature alone.

Lassen ने अपनी रचना Indian Entiquities में कहा है कि अश्वलायन गृह्ययूत्र में भारत के साथ महाभारत का भी उल्लेख मिलता है अश्वलायन का समय 350 बी.सी. हो सकता है इस तरह महाभारत का निर्माण काल 460 वर्ष बी.सी. से अधिक पहले का नहीं हो सकता।

Sorensen महोदय ने मूल महाभारत ' Ur- Mahabharat' की खोज का प्रयास किया और सभी तथाकथित असम्बद्ध उपाख्यानों को हटाने के बाद उन्हें 27000 श्लोक की कथा मिली जिसमें सुसंबद्धता थी और कोई विसंगति नहीं थी।

इधर Ludwig महोदय ने कल्पना की है कि महाभारत की कथा मुख्यतः प्रतीकात्मक है और इसमें सूर्य और रात्रि के अंधकार के ही संघर्ष का वर्णन किया गया है।

पुषालकर महोदय के शब्दों में यह विश्लेषणात्मक विधि श्री होपकिन्स द्वारा अपने शीर्ष पर पहुंचा दी गई उन्होंने महाभारत के विकास क्रम की विभिन्न तिथियां निर्धारित की हैं।

This analytic method reached its highest watermark in Hopkins, who dated the different stages of the development of the epic as follows: (1) the Bharata lays (400 B.C.) ; (2) the 'Mahabharata' tale with the Pandavas as the heroes (400-200 B.C.) ; (3) didactic interpolations(200B.C.-A.D.200); and(4) later additions(A.D.200-400); with (5) occasional amplifications (after A.D.400).

पुषालकर महोदय के इसी लेख से हमें एक और रोचक जानकारी मिलती है वह है कतिपय विद्वानों द्वारा उपस्थापित Inversion theory जो महाभारत में आपाततः प्रतीयमान विसंगतियों को दूर करने के लिए खोजी गई इन विद्वानों को ऐसा लगता है कि इसकी कथा तथा इसके द्वारा दिए जाने वाले नैतिक संदेश में भिन्नता है और इस आधार पर Adolf Holtzmann ने एक विलक्षण सिद्धांत दिया जिसे बाद में Hopkins महोदय ने Inversion theory का नाम दिया है जिसके अनुसार प्रारंभ में महाभारत की कथा के नायक कौरव रहे होंगे और पाण्डव प्रतिनायक किंतु कालक्रम से इसमें परिवर्तन आता गया और पाण्डवों के गुण गाए जाने लगे बारहवीं शताब्दी आते-आते महाभारत पाण्डवों के नायकत्व वाला ग्रंथ बन गया युद्ध में पाण्डवों द्वारा श्रीकृष्ण के कहने पर की गई अनीतियों को इस कल्पना का आधार माना जाता है। इस विचार का समर्थन कई विद्वानों ने किया है जैसे Lassen ,Winternitz and Meyer किंतु कई मान्य विद्वानों जैसे Barth , Levi, Pishel, Jacobi, Oldenverg and Hopkins ने इस सिद्धांत की आलोचना की। बाद में दो और विद्वानों L. von Schroeder and Grierson ने भी इन Inversion theory जैसी ही अवधारणा रखी किंतु उसके पृथक-पृथक कारण बताए गए पुषालकर महोदय के अनुसार इस कारण इस अवधारणा की ही वैधता पर प्रश्न चिह्न लग जाता है।

विश्लेषणात्मक पद्धति फलप्रद नहीं रही और इसका कारण यह है कि पश्चिमी विद्वानों जैसे कि Mathew Arnold द्वारा परिभाषित काव्य के मानदण्डों के आधार पर भारतीय सभ्यता के इस प्राचीन महाकाव्य को परखना ही असंगत लगता है क्योंकि काव्य का भारतीय आदर्श पश्चिमी आदर्श से भिन्न रहा है इसी कारण से प्रसिद्ध विद्वान सुकथंकर महोदय ने कहा है

The application of the analytic method in the case of the Mahabharata would lead us not to one source but to many sources Moreover the nucleus that we may possibly be able to discover in our analytical adventures is in all probability likely to be merely a projection of our own feeling .

इसके पश्चात हम दूसरी पद्धति संश्लेषणात्मक पद्धति की चर्चा करेंगे जिसके अनुसार हमें इस महाकाव्य को इसकी संपूर्णता में देखना चाहिए इस विचार धारा के मुख्य प्रवक्ता Dahlmann हैं इस विचारधारा के अनुसार जिसे Hopkins ने Synthetic Theory का नाम दिया है। महाभारत अपने आप में संपूर्ण एक संगठित इकाई है जिसका एक विशिष्ट उद्देश्य है और एक निश्चित योजना। यह कथा धर्म तथा नीति को समझाने के लिए लिखी गई थी और इसकी रचना निश्चित रूप से 500 बी. सी. के बाद की नहीं है। Jacobi Barth and Sukthankar इससे सहमत हैं केवल तीसरे कथन को छोड़कर क्योंकि उनके अनुसार संपूर्ण कथा 500 बी. सी. तक नहीं रची गयी इसमें चौथी शताब्दी ईसवी तक कुछ परिवर्धन होता रहा।

पिषानी महोदय के अनुसार इस कथा का बहुत सा भाग पहले से उपस्थित था जिसे बाद में पूर्णता दी गई विसंगतियों को हटाया गया और इस प्रक्रिया में परिवर्तन भी किये गए उनके अनुसार वर्तमान स्वरूप में महाभारत एक ब्राह्मण की रचना है जिसे सुकथंकर महोदय ने और भी स्पष्ट रूप से कहते हुए

भृगु वंशी ब्राह्मण माना है उनके अनुसार सूतों से यह रचना भृगुओं के अधिकार में चली गयी जो धर्म और नीति के अधिकारी विद्वान थे और उन्हीं के कारण आज हम देखते हैं कि शांति और अनुशासन पर्वों में धर्म और नीति की इतनी विस्तारित चर्चा है।

महाभारत हमें आज दो रूपों में प्राप्त होता है उत्तरी भारत पाठ और दाक्षिणात्य पाठ उत्तरी पाठ मुख्यतः कश्मीर की शारदा लिपि नेपाली लिपि मैथिली लिपि बंगाली लिपि तथा देवनागरी लिपि में प्राप्त होता है जबकि दाक्षिणात्य पाठ तेलुगु ग्रंथ तथा मलयालम लिपियों में प्राप्त होता है इस सबके आधार पर भंडारक ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना ने एक प्रमाणिक ग्रंथ प्रकाशित किया है।

'महाभारत का स्वरूप तथा प्रतिपाद्य'

पुषालकर महोदय अपने लेख में बताते हैं कि महाभारत के लक्षणों पर अनेक कल्पनायें करने की अपेक्षा विद्वान इस विषय पर क्यों ध्यान नहीं देते कि यह संपूर्ण कथा जनमेजय द्वारा व्यासजी से अपने पूर्वजों के विषय में जानने की अभिलाषा व प्रार्थना से प्रारंभ हुआ है जब नाग यज्ञ में उन्होंने यह प्रश्न किया कि किस प्रकार उच्च चरित्र वाले हमारे पूर्वजों में भेद उत्पन्न हो गया और किस प्रकार यह युद्ध हो गया जो सर्व नाशी था इसी से ज्ञात होता है कि महाभारत मूलतः इतिहास है।

सच पूछिए तो यह भारतीय संस्कृति और इतिहास का विश्वकोश व दर्शन है महाभारत में जो यह लिखा है कि धर्म अर्थ काम और मोक्ष के विषय में जो कुछ यहां है वही अन्यत्र है और जो यहां नहीं है वह कहीं नहीं है

धर्मं ह्यर्थं कामे मोक्षे च भरतर्षभ

यदि हास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत क्वचित्

यह अक्षरशः सत्य है जब भीष्म युधिष्ठिर से धर्म और नीति का उपदेश शांति और अनुशासन पर्व में करते हैं तो धर्मशास्त्र नीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र तीनों का स्वरूप यह ग्रंथ धारण कर लेता है राजधर्म प्रकरण मूर्तमान अर्थशास्त्र है विदुर जब धृतराष्ट्र को नीति का ज्ञान देते हैं तो नीतिशास्त्र मूर्तिमान हो जाता है और जब भगवान श्रीकृष्ण स्वयं भीष्म पर्व में अठारह अध्यायों में विस्तृत सात सौ श्लोकात्मक अपनी वाणी अपने प्रिय अर्जुन को गीता रूप में सुनाते हैं समस्त वेदों और उपनिषदों और दर्शनों का सार उपस्थित हो जाता है यहां सांख्य भी है योग भी ज्ञान कर्म और भक्ति तीनों की त्रिवेणी बहती है। यहां यह ग्रंथ मोक्ष शास्त्र बन जाता है।

भारतीय कला का आदर्श ही है कि यहां प्रत्येक अभिव्यक्ति के अनेक स्तर होते हैं और अधिकारी भेद के अनुसार स्थूल सूक्ष्म और व्यापक अर्थ होते हैं हमारे सबसे प्राचीन ग्रंथ वेदों से ही यह प्रवृत्ति चली आयी है जहां प्रत्येक मंत्र का आधि भौतिक अर्थ है आधि दैविक अर्थ है और सबसे गहन आध्यात्मिक अर्थ भी है महाभारत जैसा महाकाव्य केवल भौतिक कथा कैसे रह सकता है ।

जिस प्रकार जय फिर भारत और फिर महाभारत इस प्रकार तीन स्वरूप विस्तार इस ग्रंथ के बताये गए हैं इसके प्रारंभ के विषय में ही विद्वानों में मतभेद है महाभारत में ही लिखा है -

मन्वादि भारतं केचित आस्तीकादि तथापरे।

तथोपरिचरादन्ये विप्रः सन्यक अधीयते।

अर्थात् कुछ विद्वानों के अनुसार महाभारत जैसा कि सौति ने वर्णित किया है प्रथम अध्याय से प्रारंभ होता है कुछ के अनुसार आस्तीक प्रकरण से प्रारंभ होता है और कुछ के अनुसार उपरिचर प्रकरण से प्रारंभ होता है ऐसा माना जाता है कि सूत ने अध्याय प्रथम से वैशम्पायन ने अध्याय तेरह से और व्यास ने अध्याय 54 से महाभारत का प्रारंभ किया था इन तीन समारंभों की व्याख्या करते हुए माधवाचार्य ने अपने ग्रंथ महाभारत तात्पर्य निर्णय में लिखा है कि कृष्ण और पांडवों से संबंधित घटनाओं को वर्णन करने वाला भारत आस्तीकादि है और इतिहास है जहां हम नीति धर्म प्रेम इत्यादि का वर्णन पाते हैं और ब्रह्म देवताओं का वर्णन पाते हैं वह मन्वादि है और धर्ममय है तथा जहां हम पाते हैं कि संपूर्ण कथा में ही उपरिचर अर्थात् सर्वश्रेष्ठ सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्रकारांतर से वर्णन किया गया है तब यह उपरिचर आदि हो जाता है।

पुषालकर जी अपने लेख में आगे कहते हैं कि सुकथंकर महोदय ने 1942 में दिए गए अपने व्याख्यान में स्पष्ट कहा था कि महाभारत के तीन आयाम हैं सांसारिक नैतिक और आध्यात्मिक। सांसारिक आयाम में हम भीषण भ्रातृधाती संघर्ष देखते हैं नैतिक आयाम में यह धर्म और अधर्म न्याय और अन्याय का संघर्ष है और आध्यात्मिक अर्थों में यह वैश्विक स्तर पर विकास की एक अवस्था मात्र है।

पुषालकर जी के स्वयं के शब्दों में Shri Krishna is the Paramatman (Super-self) and Arjuna the Jivatman(the individual self) Dhrtarastra is a symbol of the vacillating ego-centric self while his sons symbolize in their aggregate the brood of ego-centric desires and passions. Vidura stands for Buddhi the one-pointed reason and Bhishma is tradition the time bound element in human life and society .

महाभारत का संदेश

महाभारत के अंतिम पर्व स्वर्गारोहण पर्व के पंचम अध्याय में महाभारत की रचना का उद्देश्य धर्म की स्थापना बताया गया है जैसा कि निम्नलिखित श्लोक से स्पष्ट है ।

अनागतश्च मोक्षश्च कृष्णद्वैपायनः प्रभुः ।
संदर्भ भारतस्यस्य कृतवान् धर्म काम्या ॥53/5 ॥

इसी अध्याय में महाभारत का अंतिम संदेश सम्मिहित है जो इस प्रकार है :-

1. इस संसार में सहस्रों बार माता और पिता मिले हैं अर्थात् जीव ने जन्म ग्रहण किया है और सैकड़ों बार पत्नी और पुत्र मिले हैं किंतु वे सब चले गए, जा रहे हैं और जाएंगे। अर्थात् यहां के संबंध अस्थायी है। इन संयोगों में वियोग अवश्यभावी है। यही बात इस पुण्यमयी संहिता का रचकर अपने पुत्र सुखदेव को इसका ज्ञान दिया था।

माता पितृ सहस्राणि पुत्रदारुणतानि च ।
संसारेश्नुभूतानि यान्ति यास्यन्ति चा परे ॥60/5॥

आगे व्यास जी का वचन है कि इस संसार में आकर मूढ़ व्यक्ति को सारी वय प्रतिदिन हजारों हर्ष के अवसर और हजारों भय के हेतु अनुभूत होते हैं और उसे पीड़ित करते हैं किन्तु ज्ञानी को वे पीड़ित नहीं करते ।

हर्षस्थान सहस्राणि भयस्थान शतानि च ।
दिवसे दिवसे मूढमाविषन्ति न पण्डितम् ॥61॥

व्यास जी ने एक अत्यंत मूल्यवान् बात कही है । सामान्यतः यह समझा जाता है कि अर्थ से काम और अर्थ से ही धर्म और धर्म से फिर स्वर्ग की प्राप्ति होती है । किंतु व्यास जी कहते हैं मैं अपनी भुजाएं उठाकर उच्च स्वर में यह घोषणा करता हूं कि धर्म से सब कुछ प्राप्त होता है । यहां तक कि धर्म से ही अर्थ और काम भी प्राप्त होते हैं । किंतु मेरी बात कोई सुनता नहीं । क्या ें नहीं लोग इस सब कुछ देने वाले धर्म का सेवन करते हैं ।

उर्ध्वबाहुविरौम्येष न च कश्चिच्छृणोति मे ।
धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते ॥ 62/5॥

और अंत में वे एक शाश्वत सत्य की घोषणा करते हैं जो महाभारत का चरम संदेश है कि न तो कामना के कारण, न भय के कारण, न ही भय के कारण और तो और स्वयं

जीवन के कारण भी धर्म का कभी परित्याग न करे । क्योंकि धर्म ही नित्य है। सुख और दुख दोनों ही अनित्य हैं आने जाने वाले हैं। जीवात्मा शाश्वत है और इसको बंधन में डालने वाला कर्म बंधन अनित्य है।

न जातु कामान्न भयान्न न लोभाद् ।

धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः ।

नित्यो धर्मः सुखदुःखे त्वनित्ये

जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः ॥63/5॥

इस परम ज्ञान को सौती भारत सावित्री कहते हैं और घोषणा करते हैं कि जो प्रातःकाल उठकर इसका पाठ करता है वह महाभारत के वास्तविक फल को प्राप्त करके परब्रह्म को पा जाता है।

महाभारत के यह स्वर हमें स्वर्गारोहण पर्व से पहले ही सुनाई पड़ने लगते हैं । उदाहरण के लिए मौषल पर्व में जब वृषणी वंशियों के विनाश और अनाथ यादव सुंदरियों के आभीरं द्वारा लूट लिए जाने पर उनकी रक्षा में असमर्थता से अत्यंत निराश और क्षुब्ध अर्जुन जब व्यास आश्रम में जाते हैं तब व्यास जी ने उन्हें समझाया है। हे भरत वंशी अर्जुन, सब कुछ काल के आधीन है। समयानुसार उसी से बुद्धि, तेज और सिद्धियां उदित होती हैं। और समयानुसार , विपरीत काल होने पर ये सब लुप्त भी हो जाते हैं। संसार रूपी बीज का मूल काल ही है। और काल ही स्वेच्छा से इस सबको समेट लेता है । काल ही समयानुसार बलवान हो जाता है और वही दुर्बल हो जाता है। कभी वह स्वामी बनता है और कभी वही दूसरों का वशवर्ती दास। इसलिए तुम शोक न करो।

एवं बुद्धिश्च तेजश्च प्रतिपत्तिश्च भारत ।

भवन्ति भाव कालेषु विपद्यन्ते विपर्यये ॥32/8॥ मौषल पर्व

कालमूलमिदं सर्वः जगद्वीजं धनंजय ।

कालएव समादत्ते पुनरेव यदृच्छया ॥33॥

स एव बलवान् भूत्वा पुनर्भवति दुर्बलः ।

स एवेषश्च भूत्वेह परैराज्ञाप्यते पुनः ॥34॥

यही स्वर स्वयं धर्मराज के हैं जब उन्हें द्वारिका के यदुवंशियों के प्रभास क्षेत्र में गृहयुद्ध में सर्वनाश का दारुण वृत्तांत सुनने को मिलता है तो वे अर्जुन से कह उठते हैं कि संसार में प्राणी काल के ही अधीन है। और अब मैं भी स्वयं को काल पाश के वश में मानता हूं। हे अर्जुन तुम्हारा क्या विचार है ?

कालःपचति भूतानि सर्वान्येव महामते ।

कालपाषमहं मन्ये त्वमपि दृष्टुमर्हसि ॥3/1 ॥ महाप्रस्थानिक पर्व

जितने भी शास्त्र हैं उनका मुख्य प्रतिपाद्य ही धर्म है और उनमें सर्वत्र हरि की महिमा का ही गान होता है। इसी में उनकी शाश्वतता और शास्त्रत्व है। महाभारत ही इसका अपवाद नहीं है। महाभारत के अंत में दी गई श्रवण विधि के 93वें श्लोक में स्पष्ट कहा गया है।

वेदे रामायणे पुण्ये भारते भरतर्षभ ।

आदौ चान्ते च मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते ॥93॥

'महाभारत का प्रभाव '

हेमचन्द्र रायचौधरी ने अपने लेख The Mahabharata :Some aspects of its culture में अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त किए हैं ।

Next to the Rg-veda samhita the Mahabharata is perhaps the most remarkable work in sanskrit literature. it is the biggest of the world's epics. Since the commencement of the sixth century A.D. , it is known to have consisted of 100000 verses, that is, about eight times the size of the *iliad* and the *Odyssey* put together. The heroes of this great poem find prominent mention in the works of grammarians, theologians, political thinkers poets and dramatists almost uninterruptedly, from about the fifth century B.C. Precepts culled from it are quoted by a Greek envoy as early as the second century B.C. while the prowess of its principal heroes is mentioned with admiration by royal personages in

the Deccan already in the second century A.D. The whole poem is known to have been recited in temples in far-off Cambodia as early as the sixth century A.D. In the next century, we find the Turks of Mongolia reading in their own idiom thrilling episodes like the *Hidimbavadha*. The work was translated into their own vernacular by the people of Java before the end of the eleventh century A.D.

नीलमाधव सेन ने अपने लेख The influence of the epics on indian life and literature महाकाव्यद्वय के भारतीय जनजीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन करते हुए लिखा है ।-

The Vedas the Upanisads the Ramayana and the Mahabharata and the eighteen Puranas form the massive basement on which stands the magnificent edifice of Indian religion and thought culture and literature . Of these the two great epics form the strongest single factor that has sustained and held together indian life , in all its growth and ramifications , through the vicissitudes of centuries. The Vedas were confined chiefly to the priestly and aristocratic classes and the Upanisads to the intellectuals and philosophers it was the epics and the puranas that became the real Vedas for the masses and moulded their life and character for the last two aspects of life for the last two thousand years. There is hardly any other work whose influence in all aspects of life in India has been so profound , lasting and continuous as that of epics and the Puranas.

परवर्ती काल में महाभारत का साहित्य दर्शन व कला के क्षेत्र में व्यापक गहन और दूरगामी प्रभाव पड़ा है महाभारत पर आधारित शतशः ग्रंथ संस्कृत और हिन्दी भाषा में लिखे गए संस्कृत के प्रसिद्ध पांच महाकाव्यों में से वृहतत्रयी के तीनों महाकाव्य किरातार्जुनीयम् (भारवि छठीं शताब्दी) षिषुपाल वध (माघ) सातवीं शताब्दी नैषधीय चरित (श्रीहर्ष बारहवी शताब्दी) महाभारत पर ही आधारित हैं क्षेमेन्द्र ने महाभारत मंजरी का प्रणयन 1037 ईसवी में किया तो आनन्द भट्ट ने भारत चंपू 12 स्तवकों में लिखा 13वीं सदी में गुजरात के

विषाल देव महाराज के शासनकाल में अमर चंद सूरि ने 19 सर्गों का बाल भारत लिखा वामन भट्ट बाण ने 15 वीं सदी में नलाभ्युदय लिखा इससे पूर्व केरला के महाराज कुलषेखर वर्मा नवीं शताब्दी ईसवी के समकालीन कवि वासुदेव ने नलोदय काव्य लिखा दसवीं शताब्दी ईसवी में त्रिविक्रम भट्ट ने नलचंपू लिखा जो बहुत अलंकृत रचना है।

सबसे प्राचीन लेखकों में भास का नाम आता है जिन्होंने महाभारत पर आधारित छः नाटक लिखे हैं मध्यम व्यायोग, दूत घटोत्कच, पंचरात्र, दूत वाक्य, उरुभंग तथा कर्ण भार भास कालीदास के भी पूर्ववर्ती माने जाते हैं कालीदास का सुप्रसिद्ध अभिज्ञानशाकुन्तलम नाटक महाभारत के शाकुन्तलोपाख्यान पर आधारित है आठवीं सदी में भट्ट नारायण का लिखा हुआ वेणीसंहार नाटक भी महाभारत पर आधारित है राजषेखर ने दसवीं शताब्दी में बालभारत नाटक की रचना की जो संपूर्ण महाभारत कथा पर आधारित है नवीं शताब्दी में केरला के राजा कुलषेखर वर्मा ने महाभारत पर आधारित दो नाटक लिखे हैं सुभद्रा धनंजय तथा तपती संवरण 12वीं सदी में हस्ति मल्ल ने विक्रान्त कौरव नाटक लिखा तो चालुक्य राजा कुमार पाल 12वीं सदी के समकालीन विजयपाल ने द्रुपदी स्वयंवर नाटक लिखा वारंगल के राजा प्रताप रुद्र (1291 ए.डी.) के आश्रय में कवि विश्वनाथ ने सौगंधिक हरण की रचना की।

बुद्ध साहित्य पर महाभारत का स्पष्ट प्रभाव हुआ संयुक्त निकाय में वर्णित प्रसंग जिसमें बुद्ध यक्ष के प्रश्नों का उत्तर देते हैं युधिष्ठिर द्वारा यक्ष को दिए गए प्रश्नों के उत्तर देने से प्रेरित लगता है विदुर पंडित जातक में वर्णित विदुर महाभारत के ही हैं।

जैन साहित्य पर भी महाभारत का व्यापक प्रभाव हुआ है इसमें श्वेतांबरों ने तो मुख्यतः महाभारत कथा में परिवर्तन किया है किंतु दिगंबरों ने कथा को यथा रूप स्वीकार किया है मुख्य रूप से अरिष्ट नेमि की कथा कही गयी है जो भगवान वासुदेव के समकालीन तीर्थंकर कहे गये हैं इस संबंध में सबसे प्राचीन उपलब्ध ग्रंथ जिन सेन कृत हरिवंश पुराण है जो 783 ईसवी में लिखा गया है नवीं सदी में गुण भद्र ने उत्तर पुराण लिखा तथा 1551 में शुभचंद्र ने जैन महाभारत लिखा इससे पूर्व 12वीं सदी में मालधारी देवप्रभा सूरि ने अठारह सर्गों में पाण्डव चरित लिखा और असंग ने 11वीं सदी में पाण्डव पुराण लिखा ये दिगंबर थे।

अन्य भारतीय भाषाओं में भी महाभारत का प्रचार प्रसार हुआ और इस कथा के अनुवाद किये गए तथा इस पर आधारित नवीन ग्रंथ भी लिखे गए

1. असमिया भाषा में 16 वीं सदी में राम सरस्वती ने महाभारत का अनुवाद कूच बिहार के राजा नर नारायण के अनुरोध पर किया था।

2. बंगला भाषा में सर्वप्रथम 16 वीं सदी में महाभारत कवीन्द्र परमेश्वर द्वारा लिखा गया। जिसे पाण्डव विजय कहा गया था किंतु बंगाली भाषा में काशीराम दास द्वारा 17वीं सदी में रचित महाभारत अधिक लोकप्रिय है इसे उनके भांजे नंदराम ने पूर्ण किया। यह रचना कृत्तीवास रामायण के साथ बंगला साहित्य की अमूल्य निधि मानी जाती है।

3. गुजराती में नाकरा 1550 ई. ने सर्वप्रथम महाभारत का अनुवाद किया बाद में प्रेमानंद जी ने गुजराती महाभारत लिखा जो अधिक पूर्ण है आधुनिक काल में 1877 ई. में नानालाल ने कुरुक्षेत्र महाकाव्य लिखा है जानपीठ पुरस्कार विजेता पन्नालाल पटेल द्वारा लिखित विस्तृत उपन्यास पार्थ से कहो चढ़ाये बाण महाभारत पर ही आधारित है।

4. हिन्दी सबसे पहले 1670 ई. में सबल सिंह चौहान ने चौबीस हजार पद्यों में महाभारत का पद्यानुवाद लिखा है अठारहवीं सदी में गोकुल नाथ जी ने महाभारत पर मान्य अनुवाद किया था मैथिलीशरण गुप्त जी ने जयभारत ग्रंथ लिखा जो 47 सर्गों में विस्तृत महाभारत पर आधारित महाकाव्य है उन्होंने अन्य अनेक रचनाएं जैसे जयद्रथ वध सैरेन्धी, वन वैभव आदि महाभारत पर ही आधारित है।

5. कन्नड़ 902 सदी में पंपा प्रथम ने कन्नड़ महाभारत लिखा जिसका शीर्षक था विक्रमार्जुन विजय इसे पंपा भारत या समस्त भारत भी कहते हैं 16वीं सदी में आकर नार नप्पा जिन्हें कुमार व्यास भी कहते थे महाभारत के प्रथम दस पर्वों का कन्नड़ भाषा में अनुवाद किया शेष पर्वों का अनुवाद तिमन्ना ने किया और उसे अपने आश्रयदाता के नाम पर कृष्णराय भारत रखा लक्ष्मी कवि ने भी लक्ष्मी कवि भारत की रचना की है और 18वीं सदी में लक्ष्मीष कवि ने अपनी प्रसिद्ध रचना जैमिनि भारत की रचना की जिसे कन्नड़ में बड़ी ख्याति मिली ।

6. मलयालम में एजुटुकन जो कि आध्यात्म रामायण के मलयाली अनुवाद कर्ता हैं ने महाभारत का भी अनुवाद सार रूप में मलयाली में किया है आधुनिक काल में अनेक उच्च कोटि के नाटक महाभारत के पात्रों पर लिखे गए जैसे एन.पी. चेलप्पन नायर कृत करणन् महाकवि उल्लूर द्वारा लिखित अंबा और श्री के.एम. पणिककर द्वारा लिखित भीष्मर।

7. मराठी महाभारत का पद्यानुवाद मराठी में लिखकर कवि मुक्तेश्वर ने पर्याप्त ख्याति प्राप्त की है यह रचना 1650 ई. में मुख्यतः ओवी छंद में लिखी गयी किंतु मराठी भाषा में श्रीधर कृत पाण्डव प्रताप अधिक लोकप्रिय है जिसमें 13000 पद्य हैं मोरोपंत जी ने भी मराठी महाभारत लिखा है रघुनाथ पंडित कृत दमयंती स्वयंवर मराठी साहित्य की माननीय रचना है तो पंत प्रतिनिधि द्वारा लिखित भीष्म प्रतिज्ञा कम प्रसिद्ध नहीं है चिपलूनकर महोदय ने महाभारत का पूरा गद्य में अनुवाद किया है।

8. उड़िया सारलादास जो अशिक्षित किसान थे दैवीय प्रेरणा से 14वीं सदी में उड़िया का प्रथम महाभारत लिख सके कथा में उन्होंने यत्र-तत्र

परिवर्तन किये हैं यह रचना उड़ीसा के जन-जन में प्रसिद्ध है 17वीं सदी में विष्भरदास ने विचित्र महाभारत की रचना की और राजा कृष्ण सिंह ने 18 वीं सदी में महाभारत उड़िया में लिखा भीम धीवर की कृति भारत सावित्री संपूर्ण महाभारत की कथा वर्णित करती है ।

9. तमिल पेरुन्देवनार जिनका समय 10 वीं सदी माना जाता है ने महाभारत का अनुवाद तमिल भाषा में किया था वर्तमान काल में चक्रवर्ती राज गोपालाचारी ने भी महाभारत का संक्षिप्त गद्यानुवाद व्यासार विरुंदु नाम से किया है जिसका अंग्रेजी अनुवाद पर्याप्त प्रचलित है ।

10. तेलुगु में तो प्रथम उपलब्ध ग्रंथ ही नानैया द्वारा 11वीं सदी में लिखित महाभारत है कहा जाता है कि उन्होंने केवल प्रथम ढाई पर्व ही पूरे किये उनका काव्य उच्च स्तरीय था बाद में 13वीं सदी में टिक्कन ने अगले 15 पर्वों का महाभारत काव्य लिखा आधुनिक काल में भी महामहोपाध्याय कृष्ण मूर्ति शास्त्री ने महाभारत का पद्यानुवाद प्रस्तुत किया है ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में लिखे गए महाभारत पर आधारित ग्रंथ

यद्यपि सर्वेषामपि कवि मुख्यानामुप जीव्योभविष्यति कहकर स्वयं व्यास जी ने महाभारत की परवर्ती महाकवियों व कवियों द्वारा उपजीव्यता की घोषणा कर दी थी किंतु इसका इतना विशद और व्यापक प्रभाव होगा यह भान संभवतः किसी को नहीं था ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य का आरंभ हम बीसवीं सदी से मान सकते हैं जिसमें ब्रज भाषा के स्थान पर खड़ी बोली का प्रयोग क्रमशः बढ़ता चला गया और वही काव्य की मुख्य भाषा हो गई खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य हरिऔध जी का प्रिय प्रवास है। जो कृष्ण के चरित्र पर आधारित है अतः महाभारत से संबंधित है। इसका प्रकाशन वर्ष 1914 है । डा. प्रतिपाल सिंह के शोध प्रबंध ' बीसवीं सती (पूर्वाध्द) के महाकाव्य से इस काल में लिखे गए महाकाव्यों का अच्छा परिचय मिल जाता है। इस अवधि में लिखे गए महाकाव्यों से महाभारत पर आधारित महाकाव्य प्रिय प्रवास तथा पुरोहित प्रताप नारायण का नलनरेश है जो 1933 में प्रकाशित हुआ। कृष्ण कथा पर आधारित दो और महाकाव्य भी हैं तुलसीराम शर्मा कृत पुरुषोत्तम 1939 तथा अवधी भाषा में पंडित द्वारका प्रसाद मिश्र द्वारा लिखा गया कृष्णनायन जो 1943 में प्रकाशित हुआ। इस काल का उल्लेखनीय खण्डकाव्य दिनकर का कुरुक्षेत्र है जो इसी वर्ष 1943 में प्रकाशित हुआ।

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास प्रकाशित किया गया है उसमें काव्य के लिए छायावाद काल को सर्वोत्तम बताया गया है इसके संपादक मंडल के अधिकारी विद्वानों के अनुसार छायावाद का काल 1917 से 1938 के बीच का है इस दौरान कवियों ने एक से एक उत्कृष्ट रचनाएं लिखीं किंतु कहा गया है कि छायावाद की भाव भूमि प्रबंध काव्य लिखने के उपयुक्त नहीं थी और इस कारण इस युग में महाकाव्य अधिक नहीं लिखे गए। फिर भी इस युग में खण्ड काव्य और महाकाव्य जो लिखे गए हैं उनका संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

श्री लाल खत्री द्वारा महाभारत ग्रंथ 1925 में लिखा गया श्री बसंत राम बसंत कृष्णायन ब्रज भाषा में 1936 में लिखा गया और रूप नारायण पाण्डेय कविरत्न का ग्रंथ श्री कृष्ण चरित यद्यपि 1937 में लिखा गया इसका प्रकाशन 1957 में हो सका ये तीनों ही रचनाएं महाभारत पर आधारित हैं यद्यपि इन्हें विद्वानों ने महाकाव्य की गरिमा से मंडित नहीं किया है छायावादी युग के प्रथम महाकाव्य होने का गौरव 1929 में लिखे गए रामचरित चिंतामणि को प्राप्त है और जो श्री रामचरित उपाध्याय द्वारा लिखा गया और इस युग का अंतिम महाकाव्य सिद्धार्थ 1937 में अनूप शर्मा द्वारा लिखा गया और इस काल का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य कामायनी 1935 में प्रसाद जी द्वारा लिखा गया गुप्त जी का साकेत 1931 में प्रकाशित हुआ 1933 में प्रताप नारायण पुरोहित का महाकाव्य नल नरेश प्रकाशित हुआ और गुरु भक्त सिंह भक्त का नूरजहां 1933 में प्रकाशित हुआ बाल कृष्ण शर्मा नवीन का ग्रंथ उर्मिला 1930 से 1934 के बीच लिखा गया बलदेव प्रसाद मिश्र की कृति कौशल किशोर 1934 की रचना है तो अयोध्या के राजकवि रामनाथ ज्योतिषी का महाकाव्य श्री रामचन्द्रोदय 1937 में प्रकाशित हुआ इस प्रकार हम देखते हैं कि इस युग में बीस वर्ष की अवधि में 9 मान्य महाकाव्य लिखे गए किंतु महाभारत की कथा पर आधारित इनमें एक ही था अर्थात् नल नरेश।

खण्ड काव्य अवश्य ही अनेक लिखे गए जिनमें निम्न लिखित खण्ड काव्य महाभारत पर आधारित थे ।

क्रमांक	रचना का नाम	प्रकाशन वर्ष	कवि का नाम
01	अभिमन्यु का आत्मदान	1918	कमला प्रसाद वर्मा
02	कीचक वध	1921	षिव दास गुप्त कुसुम
03	दुर्योधन वध	1926	जगदीश नारायण तिवारी
04	सैरन्धी	1917	मैथिली शरण गुप्त
05	वन वैभव	1927	मैथिली शरण गुप्त
06	वक संहार	1927	मैथिली शरण गुप्त
07	प्रण भंग	1929	रामधारी सिंह दिनकर
08	संधि संदेश	1929-30	दामोदर सहाय सिंह
09	अभिमन्यु वध	1932	रामचन्द्र शुक्ल सरस
10	अज्ञात वास	1933	रामसहाय शर्मा मराल

गीति काव्य

क्रमांक	रचना का नाम	प्रकाशन वर्ष	कवि का नाम
01	मत्स्यगंधा	1934	श्री उदय शंकर भट्ट
02			

डा. निजामुद्दीन के शोध प्रबंध स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी महाकाव्य जो 1981 में पुस्तक के रूप में प्रकाशित भी हुआ। 1947 से 1980 के बीच 30 वर्षों में लिखे गए महाकाव्यों का अच्छा विवरण उपस्थित करता है। उन्होंने महाभारत पर आधारित महाकाव्यों का परिचय देते हुए डा. विनय को उद्धृत किया है। इन्होंने अपनी रचना महाभारत का आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों पर प्रभाव में लिखा है कि

' उसी प्रकार हिन्दी में भी ऐसी अनेकानेक रचनाएं हैं जिनके आख्यान और वृत्त महाभारत पर आधारित हैं। ऐसे ग्रंथों में मुख्यतः ये हैं। जरासंध वध (गिरिधर दास), कृष्णसागर (जगन्नाथ सहाय) , कृष्णायन (विसाहूराम) , जयद्रथ वध (मैथिलीशरण गुप्त), शकुंतला, वकसंहार, नहुष तथा जयभारत (मैथिलीशरण गुप्त), अभिमन्यु वध (रामचंद्र शुक्ल), नलनरेश (प्रतापनारायण) , महाभारत (श्रीलाल खत्री) , कृष्णायन (द्वारका प्रसाद मिश्र), नकुल (सियाराम शरण गुप्त), कुरूक्षेत्र तथा रष्मि रथी (दिनकर), अंगराज (आनंद

कुमार) , दमयंती (ताराचंद हारीत), एकलव्य (डा. रामकुमार वर्मा), सेनापति कर्ण (लक्ष्मीनारायण मिश्र), दानवीर कर्ण (गुरुपद्म सेमवाल), तथा कौन्तेय कथा (उदय शंकर भट्ट) आदि ।

एक और महत्वपूर्ण शोध प्रबंध जो डा. जे आर बोर्से द्वारा स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य में महाभारत के पात्र प्रस्तुत किया है जो बाद में पुस्तक के रूप में कानपुर से 2002 में प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक ने आलोच्य काल में महाभारत पर आधारित ग्रंथों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है जो महाभारत के हिन्दी साहित्य पर गहन और दूरगामी प्रभाव को स्पष्ट कर देता है। मैंने निम्नलिखित विवरण इसी ग्रंथ के आधार पर प्रस्तुत किया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महाभारत पर आधारित ग्रंथों की प्रभूत रचना हुई और 1947 से अगले 50 वर्ष में 14 महाकाव्य लिखे गए जिनकी सूची इस प्रकार है-

क्रमांक	रचना का नाम	प्रकाशन वर्ष	कवि का नाम
01	अंगराज	1950	आनंद कुमार
02	जय भारत	1952	मैथिली शरण गुप्त
03	सारथी कृष्ण	1957	श्री नाथ दिववेदी
04	सेनापति कर्ण	1958	श्री लक्ष्मी नारायण मिश्र
05	एकलव्य	1958	डॉ. रामकुमार वर्मा
06	पार्थ पत्नी महासती द्रौपदी	1961	अवध नारायण शर्मा
07	अश्वत्थामा	1981	डॉ. रत्न चन्द्र शर्मा
08	कृष्णाम्बरी	1982	पोद्दार रामावतार अरूण
09	श्री कृष्ण चरित	1989	श्री रामसहाय लाल श्रीवास्तव
10	द्रोपदी	1989	बैजनाथ शुक्ल भव्य
11	द्रोणाचार्य	1990	डॉ. इन्द्र पाल सिंह इन्द्र
12	उत्तर महाभारत	1990	डॉ. किशोर कावरा
13	कर्ण	1991	बैजनाथ प्रसाद शुक्ल भव्य
14	राधेय	1993	शिव कुमार मिश्र
15	अश्वत्थामा	2003	शिव कुमार मिश्र

इन पिछले साठ वर्षों में खण्ड काव्यों का प्रणयन भी आश्चर्य जनक रूप से बड़ी संख्या में हुआ है महाभारत के पात्रों या घटनाओं के आधार पर तीस खण्ड काव्य और छः गीति नाट्य रचे गए हैं जिन्हें संक्षेप में इस प्रकार सूची बद्ध किया जा सकता है -

क्रमांक	रचना का नाम	प्रकाशन वर्ष	कवि का नाम
01	रश्मि रथी	1951	रामधारी सिंह दिनकर
02	कर्ण	1950	केदार नाथ मिश्र प्रभात
03	महारथी	1949-50	मोहन लाल अवस्थी
04	हिडिम्बा	1950	मैथिली शरण गुप्त
05	द्रोण	1952	रामगोपाल रुद्र
06	शल्य वध	1954	उग्र नारायण मिश्र
07	पांचाली	1955	डॉ. रांगेय राघव
08	दानवीर कर्ण	1959	गुरु पदम सेम वाल
09	द्रोपदी	1960	नरेन्द्र शर्मा
10	गुरु दक्षिणा	1962	विनोद चन्द्र पाण्डेय
11	कौन्तेय कथा	1963	उदय शंकर भट्ट
12	उत्तर जय	1965	नरेन्द्र शर्मा
13	योग निद्रा	1967	डॉ. कृष्ण नंदन पीयूष
14	चक्रव्यूह	1967	विनोद चन्द्र पाण्डेय
15	जय विजय	1967	त्रिवेदी रामानंद शास्त्री
16	एकलव्य	1970	श्री रामसिंह
17	सुवर्णा	1970	नरेन्द्र शर्मा
18	भीष्म	1970	डॉ. स्वर्ण किरण
19	मंथन	1972	गणपति शंकर
20	महाप्रस्थान	1974	नरेष मेहता
21	सूर्य पुत्र	1975	जगदीश चतुर्वेदी
22	चित्रांगदा	1975	चांदमल अग्रवाल
23	वीरगति	1976	लक्ष्मी नारायण मिश्र
24	परिताप के पांच क्षण	1979	डॉ. किशोर कावरा
25	अहोरात्र	1981	सत्येन्द्र मिश्र
26	प्रणवीर	1991	केदार नाथ मिश्र प्रभात
27	नरो वा कुंजरो वा	1984	डॉ. किशोर कावरा
28	देवव्रत भीष्म	1990	रामसहाय लाल श्रीवास्तव
29	कालजयी	1991	दिनेश चंद्र द्विवेदी

गीति नाटय

क्रमांक	रचना का नाम	प्रकाशन वर्ष	कवि का नाम
01	त्रिपथगा	1954	भगवती चरण वर्मा
02	द्रोपदी	1954	भगवती चरण वर्मा
03	अंधा युग		धर्मवीर भारती
04	गुरु द्रोण का अंतर्निरीक्षण	1959	उदय शंकर भट्ट
05	अश्वत्थामा	1959	उदय शंकर भट्ट
06	पांचाली	1969	जानकी बल्लभ शास्त्री

प्रारंभ में मुझ जैसे व्यक्ति के मन में एक निराशा थी कि प्रयोगवाद तथा मुक्त कविता के इस युग में गेय कविता और प्रबंध काव्य दोनों उपेक्षा ग्रस्त हुई हैं और प्रबंधों के लिए यह एक हास का युग है जो तार सप्तक के प्रकाशन से प्रारंभ हो जाता है किंतु मैं आभारी हूँ डॉ. निजामुद्दीन का जिन्होंने अपने शोध प्रबंध स्वातंत्रोत्तर हिन्दीमहाकाव्य के द्वारा पाठकों का ज्ञान वर्धन किया और डॉ. जे. आर. वोरसे का भी मैं ऋणी हूँ जिन्होंने अपना शोध प्रबंध स्वातंत्रोत्तर हिन्दी काव्य में महाभारत के पात्र प्रस्तुत किया जो सर्वप्रथम 2002 ई. में कानपुर से प्रकाशित हुआ इन रचनाओं को पढ़कर हमारी शंकायें मिटती हैं और यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी की प्रबंध काव्य धारा गंगा की भांति अनवरत न केवल प्रवाहमान है अपितु स्वतंत्र भारत में उसमें नवोन्मेष भी आया है अन्यथा किस युग में 50 वर्ष की अवधि में केवल महाभारत के पात्रों पर 15 महाकाव्य लिखे गए और 30 से अधिक खण्ड काव्य लिखे गए।

संक्षेप में जो महत्व भारत में भौगोलिक और आध्यात्मिक दृष्टि हिमालय और गंगा का है वही धार्मिक सांस्कृतिक तथा साहित्यिक दृष्टि से महाभारत व रामायण का है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों में -

भारतीय दृष्टि से महाभारत पांचवा वेद है, इतिहास है, स्मृति है, शास्त्र है साथ ही यह काव्य है आज तक किसी भारतीय पंडित या आचार्य ने इसकी प्रामाणिकता पर संदेह नहीं किया है कम से कम 2000 वर्षों से यह भारतीय जनता के मनोविनोद, ज्ञानार्जन, चरित्र निर्माण और प्रेरणा प्राप्ति का साधन रहा है।